रविवार 8 फ़रवरी, 2026

विषय — आत्मा

स्वर्ण पाठ: व्यवस्थाविवरण **4: 36**

"आकाश में से उसने तुझे अपनी वाणी सुनाई कि तुझे शिक्षा दे।"

उत्तरदायी अध्ययन: कुलुस्सियों **1: 3, 9-13**

3 हम तुम्हारे लिये नित प्रार्थना करके अपने प्रभु यीशु मसीह के पिता अर्थात परमेश्वर का धन्यवाद करते हैं।
9 इसी लिये जिस दिन से यह सुना है, हम भी तुम्हारे लिये यह प्रार्थना करने और बिनती करने से नहीं चूकते कि तुम सारे आत्मिक ज्ञान और समझ सहित परमेश्वर की इच्छा की पहिचान में परिपूर्ण हो जाओ।
10 ताकि तुम्हारा चाल-चलन प्रभु के योग्य हो, और वह सब प्रकार से प्रसन्न हो, और तुम में हर प्रकार के भले कामों का फल लगे, और परमेश्वर की पहिचान में बढ़ते जाओ।
11 और उस की महिमा की शक्ति के अनुसार सब प्रकार की सामर्थ से बलवन्त होते जाओ, यहां तक कि आनन्द के साथ हर प्रकार से धीरज और सहनशीलता दिखा सको।
12 और पिता का धन्यवाद करते रहो, जिस ने हमें इस योग्य बनाया कि ज्योति में पवित्र लोगों के साथ मीरास में समभागी हों।
13 उसी ने हमें अन्धकार के वश से छुड़ाकर अपने प्रिय पुत्र के राज्य में प्रवेश कराया।

पाठ उपदेश

बाइबल

1. अय्यूब **32: 8 (वहाँ)**

8 ...परन्तु मनुष्य में आत्मा तो है ही, और सर्वशक्तिमान अपनी दी हुई सांस से उन्हें समझने की शक्ति देता है।

2. यशायाह **64: 4 (तब से)**

4 ...क्योंकि प्राचीनकाल ही से तुझे छोड़ कोई और ऐसा परमेश्वर न तो कभी देखा गया और न कान से उसकी चर्चा सुनी गई जो अपनी बाट जोहने वालों के लिये काम करे।

इस बाइबल पाठ को प्लेनफील्ड क्रिश्चियन साइंस चर्च, इंडिपेंडेंट द्वारा तैयार किया गया था। यह किंग जेम्स बाइबल से स्क्रिप्चरल कोटेशन से बना है और मैरीक बकरी एड्डी ने क्रिश्चियन साइंस पाठ्यपुस्तक विज्ञान और स्वास्थ्य से कुंजी के साथ शास्त्र के लिए सहसंबद्ध मार्ग लिया है।

3. यहेजकेल 11: 16 (इस प्रकार) (से ;), 19 (मैं करूंगा) (से ;), 20, 21

16 प्रभु यहोवा यों कहता है कि मैं
19 और उनके भीतर नई आत्मा उत्पन्न करूंगा,
20 जिस से वे मेरी विधियों पर नित चला करें और मेरे नियमों को मानें; और वे मेरी प्रजा ठहरेंगे, और मैं उनका परमेश्वर ठहरूंगा।
21 परन्तु वे लोग जो अपनी घृणित मूरतों और घृणित कामों में मन लगा कर चलते रहते हैं, उन को मैं ऐसा करूंगा कि उनकी चाल उन्हीं के सिर पर पड़ेगी, प्रभु यहोवा की यही वाणी है।

4. 1 शमूएल 3: 1-11, 19, 20

1 और वह बालक शमूएल एली के साम्हने यहोवा की सेवा टहल करता था। और उन दिनों में यहोवा का वचन दुर्लभ था; और दर्शन कम मिलता था।
2 और उस समय ऐसा हुआ कि (एली की आंखे तो धुंघली होने लगी थीं और उसे न सूझ पड़ता था) जब वह अपने स्थान में लेटा हुआ था,
3 और परमेश्वर का दीपक अब तक बुझा नहीं था, और शमूएल यहोवा के मन्दिर में जहाँ परमेश्वर का सन्दूक था लेटा था.
4 तब यहोवा ने शमूएल को पुकारा; और उसने कहा, क्या आज्ञा!
5 तब उसने एली के पास दौड़कर कहा, क्या आज्ञा, तू ने तो मुझे पुकारा है। वह बोला, मैं ने नहीं पुकारा; फिर जा लेट रह। तो वह जा कर लेट गया।
6 तब यहोवा ने फिर पुकार के कहा, हे शमूएल! शमूएल उठ कर एली के पास गया, और कहा, क्या आज्ञा, तू ने तो मुझे पुकारा है। उसने कहा, हे मेरे बेटे, मैं ने नहीं पुकारा; फिर जा लेट रह।
7 उस समय तक तो शमूएल यहोवा को नहीं पहचानता था, और न तो यहोवा का वचन ही उस पर प्रगट हुआ था।
8 फिर तीसरी बार यहोवा ने शमूएल को पुकारा। और वह उठके एली के पास गया, और कहा, क्या आज्ञा, तू ने तो मुझे पुकारा है। तब एली ने समझ लिया कि इस बालक को यहोवा ने पुकारा है।
9 इसलिये एली ने शमूएल से कहा, जा लेट रहे; और यदि वह तुझे फिर पुकारे, तो तू कहना, कि हे यहोवा, कह, क्योंकि तेरा दास सुन रहा है तब शमूएल अपने स्थान पर जा कर लेट गया।
10 तब यहोवा आ खड़ा हुआ, और पहिले की नाईं पुकारा, शमूएल! शमूएल! शमूएल ने कहा, कह, क्योंकि तेरा दास सुन रहा है।
11 यहोवा ने शमूएल से कहा, सुन, मैं इस्राएल में एक काम करने पर हूं, जिससे सब सुनने वालों पर बड़ा सन्नाटा छा जाएगा।
19 और शमूएल बड़ा होता गया, और यहोवा उसके संग रहा, और उसने उसकी कोई भी बात निष्फल होने नहीं दी।
20 और दान से बेर्शेबा तक के रहने वाले सारे इस्राएलियों ने जान लिया कि शमूएल यहोवा का नबी होने के लिये नियुक्त किया गया है।

5. यशायाह 30: 21

21 और जब कभी तुम दाहिनी वा बाईं ओर मुड़ने लगो, तब तुम्हारे पीछे से यह वचन तुम्हारे कानों में पड़ेगा, मार्ग यही है, इसी पर चलो।

6. 1 कुरिन्थियों 1: 1 (से *2nd*,)

1 पौलुस की ओर से जो परमेश्वर की इच्छा से यीशु मसीह का प्रेरित होने के लिये बुलाया गया

7. 1 कुरिन्थियों 2: 1 (मैं, भाइयों)-7, 9-16

1 और हे भाइयों, जब मैं परमेश्वर का भेद सुनाता हुआ तुम्हारे पास आया, तो वचन या ज्ञान की उत्तमता के साथ नहीं आया।
2 क्योंकि मैं ने यह ठान लिया था, कि तुम्हारे बीच यीशु मसीह, वरन क्रूस पर चढ़ाए हुए मसीह को छोड़ और किसी बात को न जानूं।
3 और मैं निर्बलता और भय के साथ, और बहुत थरथराता हुआ तुम्हारे साथ रहा।
4 और मेरे वचन, और मेरे प्रचार में ज्ञान की लुभाने वाली बातें नहीं; परन्तु आत्मा और सामर्थ का प्रमाण था।
5 इसलिये कि तुम्हारा विश्वास मनुष्यों के ज्ञान पर नहीं, परन्तु परमेश्वर की सामर्थ पर निर्भर हो॥
6 फिर भी सिद्ध लोगों में हम ज्ञान सुनाते हैं: परन्तु इस संसार का और इस संसार के नाश होने वाले हाकिमों का ज्ञान नहीं।
7 परन्तु हम परमेश्वर का वह गुप्त ज्ञान, भेद की रीति पर बताते हैं, जिसे परमेश्वर ने सनातन से हमारी महिमा के लिये ठहराया।
9 परन्तु जैसा लिखा है, कि जो आंख ने नहीं देखी, और कान ने नहीं सुना, और जो बातें मनुष्य के चित्त में नहीं चढ़ीं वे ही हैं, जो परमेश्वर ने अपने प्रेम रखने वालों के लिये तैयार की हैं।
10 परन्तु परमेश्वर ने उन को अपने आत्मा के द्वारा हम पर प्रगट किया; क्योंकि आत्मा सब बातें, वरन परमेश्वर की गूढ़ बातें भी जांचता है।
11 मनुष्यों में से कौन किसी मनुष्य की बातें जानता है, केवल मनुष्य की आत्मा जो उस में है? वैसे ही परमेश्वर की बातें भी कोई नहीं जानता, केवल परमेश्वर का आत्मा।
12 परन्तु हम ने संसार की आत्मा नहीं, परन्तु वह आत्मा पाया है, जो परमेश्वर की ओर से है, कि हम उन बातों को जानें, जो परमेश्वर ने हमें दी हैं।
13 जिन को हम मनुष्यों के ज्ञान की सिखाई हुई बातों में नहीं, परन्तु आत्मा की सिखाई हुई बातों में, आत्मिक बातें आत्मिक बातों से मिला मिला कर सुनाते हैं।
14 परन्तु शारीरिक मनुष्य परमेश्वर के आत्मा की बातें ग्रहण नहीं करता, क्योंकि वे उस की दृष्टि में मूर्खता की बातें हैं, और न वह उन्हें जान सकता है क्योंकि उन की जांच आत्मिक रीति से होती है।
15 आत्मिक जन सब कुछ जांचता है, परन्तु वह आप किसी से जांचा नहीं जाता।
16 क्योंकि प्रभु का मन किस ने जाना है, कि उसे सिखलाए? परन्तु हम में मसीह का मन है॥

8. 1 यूहन्ना 5: 6 (और यह)

6 और जो गवाही देता है, वह आत्मा है; क्योंकि आत्मा सत्य है।

विज्ञान और स्वास्थ्य

1. 124: 25-26 (से *1st*.)

आत्मा सभी चीज़ों का जीवन, तत्व और निरंतरता है।

2. 467: 3 (यह)-7

इस साइंस की पहली मांग है, "मेरे अलावा तुम्हारे कोई और भगवान नहीं होंगे।" यह मैं ही आत्मा है। इसलिए इस आदेश का मतलब यह है: तुम्हारे पास कोई बुद्धि, कोई जीवन, कोई तत्व, कोई सच्चाई, कोई प्यार नहीं होगा, बस वही होगा जो आध्यात्मिक है।

3. 505: 16-2

आत्मा वह समझ देती है जो चेतना को ऊपर उठाती है और सभी सच्चाई की ओर ले जाती है। भजन लिखने वाला कहता है: "ऊपर का प्रभु बहुत सारे पानी के शोर से, हाँ, समुद्र की बड़ी लहरों से भी ज़्यादा शक्तिशाली है।" आध्यात्मिक समझ आध्यात्मिक अच्छाई की पहचान है। समझ असली और नकली के बीच की लाइन है। आध्यात्मिक समझ मन, — जीवन, सच्चाई और प्यार, — को सामने लाती है और ईश्वरीय समझ को दिखाती है, क्रिश्चियन साइंस में ब्रह्मांड का आध्यात्मिक सबूत देती है।

यह समझ बौद्धिक नहीं है, यह विद्वानों की उपलब्धियों का नतीजा नहीं है; यह उन सभी चीज़ों की सच्चाई है जो सामने आई हैं। भगवान के विचार अमर, अचूक और अनंत को दिखाते हैं। नश्वर, गलत और सीमित इंसानी विश्वास हैं, जो खुद को एक ऐसा काम देते हैं जो उनके लिए नामुमकिन है, यानी झूठ और सच के बीच फर्क करना।

4. 266: 27-5 (से *1st*.)

इंसान आत्मा का विचार है; वह भगवान की मौजूदगी को दिखाता है, दुनिया को रोशनी से रोशन करता है। इंसान अमर है, आध्यात्मिक है। वह पाप या कमज़ोरी से ऊपर है। वह समय की रुकावटों को पार करके जीवन की विशाल अनंतता में नहीं जाता, बल्कि वह भगवान और दुनिया के साथ रहता है।

दुनियावी सोच में हर चीज़ खत्म हो जाएगी, लेकिन आध्यात्मिक विचार, जिसका सार मन में है, हमेशा रहने वाला है। भगवान की संतानें पदार्थ या कुछ समय की धूल से शुरू नहीं होतीं। वे आत्मा, दिव्य मन में और आत्मा से हैं, और इसलिए हमेशा चलती रहती हैं।

5. 70: 1 (नश्वर)-9

इंसान का होना एक पहेली है। हर दिन एक रहस्य है। शरीर की इंद्रियों की गवाही हमें यह नहीं बता सकती कि क्या असली है और क्या धोखा है, लेकिन क्रिश्चियन साइंस के खुलासे सच्चाई के खजाने खोलते हैं। जो कुछ भी झूठा या पापी है, वह कभी भी आत्मा के माहौल में नहीं आ सकता। आत्मा सिर्फ़ एक है। इंसान कभी भगवान नहीं होता, बल्कि भगवान की तरह बना आध्यात्मिक इंसान, भगवान को दिखाता है। इस साइंटिफिक सोच में ईगो और पिता को अलग नहीं किया जा सकता।

6. 71: 1-2 (से *1st*.), 5-9

कुछ भी असली और हमेशा रहने वाला नहीं है, — कुछ भी आत्मा नहीं है, — सिवाय भगवान और उनके विचार के।

सभी असलियत की पहचान, या विचार, हमेशा बना रहता है; लेकिन आत्मा, या सभी का दिव्य सिद्धांत, आत्मा की बनावट में नहीं है। आत्मा, आत्मा, भगवान, क्रिएटिव, गवर्निंग, अनंत सिद्धांत का पर्याय है, जो सीमित रूप से बाहर है, जिसे रूप सिर्फ़ दिखाते हैं।

7. 346: 2-5

जब इंसान को भगवान की छवि में बनाया हुआ कहा जाता है, तो इसका मतलब पापी और बीमार इंसान नहीं होता, बल्कि भगवान की तरह दिखने वाले आदर्श इंसान होता है।

8. 258: 9-12, 31-1

इंसान सिर्फ़ एक भौतिक रूप से कहीं ज़्यादा है, जिसके अंदर एक मन होता है, जिसे अमर रहने के लिए अपने माहौल से बाहर निकलना पड़ता है। इंसान अनंत को दिखाता है, और यही सोच भगवान का सच्चा विचार है।

आध्यात्मिक समझ से आप ईश्वर के दिल को समझ सकते हैं, और इस तरह साइंस में आम शब्द 'इंसान' को समझना शुरू कर सकते हैं।

9. 585: 1-4

कान। तथाकथित शारीरिक इंद्रियों के अंग नहीं, बल्कि आध्यात्मिक समझ।

आध्यात्मिक समझ का ज़िक्र करते हुए यीशु ने कहा, "कान होते हुए भी क्या तुम सुनते नहीं हो?" (मरकुस 8:18)

10. 89: 20-21

आत्मा, ईश्वर, तब सुनाई देते हैं जब इंद्रियां शांत होती हैं।

11. 308: 14-15

आत्मा से प्रेरित पूर्वजों ने सत्य की आवाज़ सुनी, और भगवान से उसी तरह होश में बात की जैसे इंसान इंसान से बात करता है।

12. 84: 3-10, 28-6

पुराने पैगंबरों ने अपनी दूर की सोच आध्यात्मिक, असलियत से सीखी थी, न कि बुराई का पहले से अंदाज़ा लगाकर और सच को मनगढ़ंत समझकर — वे असलियत और इंसानी विश्वास के आधार पर भविष्य बताते थे। जब साइंस में इतना आगे बढ़ जाते हैं कि सच के साथ तालमेल बिठा सकें, तो इंसान बिना चाहे ही भविष्य बताने वाले और पैगंबर बन जाते हैं, और उन्हें शैतान, आत्माएं या देवता कंट्रोल नहीं करते, बल्कि एक आत्मा कंट्रोल करती है।

हम आत्मा के बारे में जो कुछ भी सही-सही जानते हैं, वह भगवान, दिव्य सिद्धांत से आता है, और यह क्राइस्ट और क्रिश्चियन साइंस के ज़रिए सीखा जाता है। अगर इस साइंस को अच्छी तरह से सीखा और ठीक से समझा गया है, तो हम सच को उससे भी ज़्यादा सही तरीके से जान सकते हैं जितना कोई एस्ट्रोनॉमर तारों को पढ़ सकता है या ग्रहण का हिसाब लगा सकता है।

यह माइंड-रीडिंग क्लेयरवॉयंस के उलट है। यह आध्यात्मिक समझ की रोशनी है जो आत्मा की क्षमता दिखाती है, न कि भौतिक समझ की। यह आत्मा-समझ इंसान के मन में तब आती है जब वह दिव्य मन के आगे झुक जाता है।

13. 301: 17-29

क्योंकि भगवान चीज़ है और इंसान भगवान की छवि और समानता है, इसलिए इंसान को सिर्फ़ अच्छाई की चीज़, आत्मा की चीज़ की कामना करनी चाहिए, और असल में उसे वही मिलती है, मैटर की नहीं। यह मानना कि इंसान में कोई और चीज़ या मन है, स्पिरिचुअल नहीं है और फर्स्ट कमांडमेंट, 'तुम्हारे पास एक भगवान, एक मन होगा' को तोड़ता है। मरने वाला इंसान खुद को मैटेरियल चीज़ लगता है, जबकि इंसान "छवि" (विचार) है। भ्रम, पाप, बीमारी और मौत मैटेरियल सेंस की झूठी गवाही से पैदा होते हैं, जो अनंत आत्मा की फोकल दूरी के बाहर एक माने हुए नज़रिए से, मन और चीज़ की एक उलटी छवि दिखाता है जिसमें सब कुछ उल्टा हो जाता है।

14. 210: 5-10

ईसाई धर्म के सिद्धांत और सबूत आध्यात्मिक समझ से समझे जाते हैं। ये यीशु के प्रदर्शनों में दिखाए गए हैं, जो दिखाते हैं — बीमारों को ठीक करके, बुराइयों को दूर भगाकर, और मौत को खत्म करके, जो "आखिरी दुश्मन है जिसे खत्म किया जाएगा," — कि वे चीज़ों और उसके तथाकथित नियमों को नज़रअंदाज़ करते हैं।

15. 99: 23-29

सच्ची आध्यात्मिकता की शांत, मज़बूत धाराएँ, जिनके रूप सेहत, पवित्रता और आत्म-बलिदान हैं, इंसान के अनुभव को तब तक गहरा करती हैं, जब तक कि दुनियावी दुनिया की मान्यताएँ एक सीधी-सादी बात न लगने लगें,

इस बाइबल पाठ को प्लेनफील्ड क्रिश्चियन साइंस चर्च, इंडिपेंडेंट द्वारा तैयार किया गया था। यह किंग जेम्स बाइबल से स्क्रिप्चरल कोटेशन से बना है और मैरीक बकरी एड्डी ने क्रिश्चियन साइंस पाठ्यपुस्तक विज्ञान और स्वास्थ्य से कुंजी के साथ शास्त्र के लिए सहसंबद्ध मार्ग लिया है।

और पाप, बीमारी और मौत हमेशा के लिए दिव्य आत्मा के वैज्ञानिक प्रदर्शन और भगवान के आध्यात्मिक, परफ़ेक्ट इंसान को जगह न दे दें।

दैनिक कर्तव्यों

मैरी बेकर एड्डी द्वारा

दैनिक प्रार्थना

प्रत्येक दिन प्रार्थना करने के लिए इस चर्च के प्रत्येक सदस्य का कर्तव्य होगा: "तुम्हारा राज्य आओ;" ईश्वरीय सत्य, जीवन और प्रेम के शासन को मुझमें स्थापित करो, और मुझ पर शासन करो; और तेरा वचन सभी मनुष्यों के स्नेह को समृद्ध कर सकता है, और उन पर शासन करो!

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 4

उद्देश्यों और कृत्यों के लिए एक नियम

न तो दुश्मनी और न ही व्यक्तिगत लगाव मदर चर्च के सदस्यों के उद्देश्यों या कृत्यों को लागू करना चाहिए। विज्ञान में, दिव्य प्रेम ही मनुष्य को नियंत्रित करता है; और एक क्रिश्चियन साइंटिस्ट प्यार की मीठी सुविधाओं को दर्शाता है, पाप में डांटने पर, सच्चा भाईचारा, परोपकार और क्षमा में। इस चर्च के सदस्यों को प्रतिदिन ध्यान रखना चाहिए और प्रार्थना को सभी बुराईयों से दूर करने, भविष्यद्वाणी, न्याय करने, निंदा करने, परामर्श देने, प्रभावित करने या गलत तरीके से प्रभावित होने से बचाने के लिए प्रार्थना करनी चाहिए।

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 1

कर्तव्य के प्रति सतर्कता

इस चर्च के प्रत्येक सदस्य का यह कर्तव्य होगा कि वह प्रतिदिन आक्रामक मानसिक सुझाव से बचाव करे, और भूलकर भी ईश्वर के प्रति अपने कर्तव्य की उपेक्षा नहीं करनी चाहिए, अपने नेता और मानव जाति के लिए। उनके कामों से उन्हें आंका जाएगा, — और वह उचित या निंदनीय होगा।

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 6